



Research Article

लोकगीतों में स्त्री जीवन का चित्रण: एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक अध्ययन

विभा सिंह

शोधार्थी, साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड वि०वि०, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * विभा सिंह

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23152443>

सारांश

भारतीय लोकगीत लोकजीवन की संवेदनाओं, परंपराओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों के सशक्त वाहक हैं। इनमें स्त्री जीवन का बहुआयामी चित्रण मिलता है। जन्म से लेकर विवाह, मातृत्व, श्रम, प्रेम, विरह, संघर्ष, सामाजिक दायित्व तथा पारिवारिक संबंधों तक स्त्री के जीवन के विभिन्न पक्ष लोकगीतों में सहज एवं मार्मिक रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। लोकगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे समाज में स्त्री की स्थिति, उसकी भावनाओं, अधिकारों और संघर्षों का ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय लोकगीतों, विशेषकर अवधी, भोजपुरी और ब्रज क्षेत्र के लोकगीतों के आधार पर स्त्री जीवन के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लोकगीतों में स्त्री केवल परिवार की सदस्य नहीं, बल्कि संस्कृति की संवाहिका, परंपराओं की संरक्षिका और सामाजिक परिवर्तन की महत्वपूर्ण वाहक के रूप में चित्रित होती है। साथ ही लोकगीतों में स्त्री के प्रति समाज की मान्यताओं, लैंगिक असमानताओं तथा उसकी आत्म-अभिव्यक्ति के स्वर भी स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं। यह शोध भारतीय लोकसाहित्य में स्त्री-विमर्श को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 01-05-2026
- Accepted: 25-06-2026
- Published: 30-06-2026
- IJCRM:5(3); 2026: 1170-1173
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

सिंह वि. लोकगीतों में स्त्री जीवन का चित्रण: एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):1170-1173.

Access this Article Online


www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: लोकगीत, स्त्री जीवन, लोकसंस्कृति, भारतीय समाज, नारी विमर्श, अवधी, भोजपुरी, ब्रज, लोकसाहित्य, सांस्कृतिक परंपरा।

प्रस्तावना

लोकगीत भारतीय लोकसंस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। ये किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं होते, बल्कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोकसमुदाय द्वारा गाए और संरक्षित किए जाते हैं। लोकगीतों में समाज के रीति-रिवाज, संस्कार, धार्मिक विश्वास, कृषि जीवन, उत्सव, ऋतुएँ तथा मानवीय संबंधों का यथार्थ चित्रण मिलता है। इनमें स्त्री जीवन विशेष रूप से केंद्र में रहता है क्योंकि अधिकांश लोकगीत महिलाओं द्वारा ही रचे, गाए और संरक्षित किए गए हैं।

भारतीय समाज में स्त्री अनेक भूमिकाएँ निभाती है—वह पुत्री, बहन, पत्नी, बहू और माँ के रूप में परिवार एवं समाज की आधारशिला है। लोकगीतों में इन सभी रूपों का अत्यंत संवेदनशील एवं यथार्थ चित्रण मिलता है। विवाह गीतों में बेटी की विदाई का करुण भाव, सावन के गीतों में मायके की स्मृतियाँ, कजरी और चैती में विरह तथा मातृत्व गीतों में वात्सल्य का चित्रण स्त्री जीवन की भावनात्मक गहराई को अभिव्यक्त करता है। दूसरी ओर, लोकगीत सामाजिक कुरीतियों, दहेज, लैंगिक भेदभाव और स्त्री के संघर्षों को भी उजागर करते हैं। लोकगीतों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय स्त्री केवल परंपराओं की संरक्षिका ही नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक निरंतरता की महत्वपूर्ण वाहक भी है। यही कारण है कि स्त्री जीवन का अध्ययन लोकगीतों के बिना अधूरा माना जाता है।

लोकगीतों में स्त्री जीवन के विविध आयाम:**• पुत्री के रूप में स्त्री**

भारतीय लोकगीतों में पुत्री को परिवार की स्नेहिल धरोहर माना गया है। जन्म से लेकर विवाह तक उसके जीवन के अनेक प्रसंग लोकगीतों में मिलते हैं। पुत्री के जन्म पर जहाँ कुछ क्षेत्रों में हर्ष के गीत गाए जाते हैं, जैसे :

**“आजु मोरे अंगना बाजत बधइया,
जनमी बिटिया रानी, घर भइल उजियार।”**

इस प्रकार के गीत में पुत्री के जन्म को घर में प्रकाश, आनंद और शुभता के आगमन से जोड़ा जाता है। वहीं अनेक लोकगीत समाज में पुत्र-प्राथमिकता और कन्या के प्रति भेदभाव को भी उजागर करते हैं। इससे तत्कालीन सामाजिक मानसिकता का पता चलता है। विवाह से पूर्व बेटी का मायके के प्रति लगाव, माता-पिता का स्नेह तथा भाई-बहन के प्रेम का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है, जैसे:

**“माई के अंगना खेलत रहलीं, बाबुल के दुलारी,
आज परदेस भेजत हैं मोहे, अँखियन भरि आई।”**

यह गीतात्मक भाव पुत्री के लिए मायके को सुरक्षा, स्नेह और अपनत्व के केंद्र के रूप में प्रस्तुत करता है। विदाई के समय गाए जाने वाले गीतों में बेटी की भावनात्मक पीड़ा और माता-पिता का वात्सल्य अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त होता है। विदाई गीतों में पुत्री के जीवन का सबसे मार्मिक पक्ष दिखाई देता है—

**“बाबुल के घर से चली बिटिया,
छोड़ि के आँगन द्वार,**

**माई के आँचल की छैयाँ,
अब होई पराई नार।”**

यहाँ बेटी के “पराया धन” माने जाने की सामाजिक धारणा और मायके से उसके भावनात्मक विच्छेद को अभिव्यक्ति मिलती है।

• पत्नी के रूप में स्त्री

लोकगीतों में पत्नी का स्वरूप प्रेम, समर्पण, विश्वास और त्याग से परिपूर्ण दिखाई देता है। पति के प्रति अनुराग, उसके विदेश या परदेश चले जाने पर विरह तथा पुनर्मिलन की आकांक्षा अनेक लोकगीतों का मुख्य विषय है। विशेष रूप से कजरी, चैती, बारहमासा और सावन के गीतों में विरहिणी नायिका का चित्रण अत्यंत मार्मिक है।

**“साँवर मोरे पिया, अँखियन के तारा,
तोहरे बिन सूना लागे अंगना हमारा।”**

इस प्रकार के गीतों में पत्नी अपने पति को अपने जीवन का भावनात्मक आधार मानती है।

**“पिया गए परदेस, सूना भइल अंगना,
निदिया न आवे, भीजे मोरी अँखियाँ।”**

यहाँ पति के दूर चले जाने पर पत्नी की प्रतीक्षा और विरह-वेदना व्यक्त होती है। उत्तर भारत के बिदेसिया, बिरहा और विरह-प्रधान लोकगीतों में यह भाव विशेष रूप से मिलता है।

**“सावन आयो, बदरा घिर आए,
पिया बिना मोरा मन घबराए।”**

सावन और वर्षा ऋतु से जुड़े गीतों में पत्नी की अपने पति से मिलने की इच्छा और विरह की अनुभूति बार-बार सामने आती है। इन गीतों में स्त्री अपने मन की व्यथा को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त करती है। वर्षा ऋतु, बादल, कोयल, पपीहा और झूले उसके मनोभावों के प्रतीक बन जाते हैं।

**“पिया मोसे बोले न, मोरी सुधि लेत न,
दिन बीते अँखियन पंथ निहारूँ।”**

इस तरह के गीतों में पत्नी केवल प्रेम करने वाली स्त्री नहीं, बल्कि अपनी भावनाओं को पति के सामने व्यक्त करने वाली संवेदनशील व्यक्ति के रूप में दिखाई देती है

• बहू के रूप में स्त्री

भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था का प्रभाव लोकगीतों में स्पष्ट दिखाई देता है। बहू के रूप में स्त्री को अनेक सामाजिक दायित्व निभाने पड़ते हैं। सास-बहू, ननद-भौजाई तथा देवर-भाभी के संबंधों का चित्रण लोकगीतों में अत्यंत जीवंत रूप में मिलता है।

**“धीरे-धीरे घर अपन लागे,
सासु बनीं माई,
ननद बनी बहिनी मोरी,
देवर भैया सम भाई।”**

यह गीतात्मक भाव बताता है कि समय के साथ बहू नए परिवार के सदस्यों के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करती है।

**“सासु कहे भोरहि उठ बहुरिया,
घर के काम सँभार,
चूल्हा-चौका, आँगन-बारी,
यही तो घर-परिवार।”**

यह भाव लोकगीतों में बहू से जुड़ी घरेलू जिम्मेदारियों को दर्शाता है। कुछ गीतों में बहू के श्रम, संघर्ष तथा उपेक्षा का वर्णन है, जबकि अनेक गीतों में परिवार के प्रति उसके समर्पण और प्रेम का भी चित्रण मिलता है। इससे तत्कालीन सामाजिक संरचना का यथार्थ स्वरूप सामने आता है।

• माँ के रूप में स्त्री

लोकगीतों में मातृत्व को स्त्री जीवन का सर्वोच्च रूप माना गया है। सोहर, लोरी तथा जन्मोत्सव के गीतों में माँ का वात्सल्य, स्नेह और त्याग अत्यंत भावपूर्ण ढंग से व्यक्त होता है। माँ अपने बच्चे के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है और उसे संस्कार प्रदान करने का माध्यम बनती है।

**“ललना मोरा निंदिया में सोवे,
माई धीरे-धीरे झुलावे,
अँखियन में सपने सजावे,
लाल मोरा सुख पावे।”**

यहाँ माँ की ममता और बच्चे को सुखी देखने की आकांक्षा व्यक्त होती है।

**“सो जा रे ललना, अँखियाँ मूँद ले,
माई तोरे सिरहाने बैठी,
सपनन के फूल चुन ले।”**

लोरी गीतों में माँ का वात्सल्य और बच्चे के प्रति सुरक्षा की भावना विशेष रूप से दिखाई देती है।

लोकगीतों में स्त्री की भावनात्मक अभिव्यक्ति:

लोकगीत स्त्री की आत्माभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। भारतीय समाज में जहाँ कई बार महिलाओं को खुलकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का अवसर नहीं मिलता था, वहीं लोकगीतों के माध्यम से वे अपने सुख-दुःख, प्रेम, विरह, पीड़ा, आशा, निराशा तथा सपनों को सहज रूप से व्यक्त करती थीं।

सावन, तीज, करवा चौथ, होली, कजरी और चैती जैसे पर्वों पर गाए जाने वाले गीत स्त्रियों को सामूहिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हैं। इन गीतों में उनकी सामाजिक चेतना और भावनात्मक संसार दोनों प्रतिबिंबित होते हैं।

लोकगीतों में स्त्री और श्रम:

भारतीय ग्रामीण जीवन में स्त्री कृषि, पशुपालन, जल संग्रह, घरेलू कार्य तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती है। इन कार्यों के दौरान श्रमगीत गाए जाते हैं।

• चक्की पीसते समय

**“चल रे चकिया धीरे-धीरे,
भोर भयो अब पीसूँ गेहूँ,**

**घर के सबका पेट भरूँ मैं,
माई-बाबुल को याद करूँ मैं।”**

यहाँ घरेलू श्रम के साथ स्त्री की भावनात्मक दुनिया भी व्यक्त होती है।

• धान कूटते समय

**“चल मुसरिया धीरे चल,
संग-संग बहिनी कूटें धान,
हँसी-ठिठोली करती जाएँ,
कट जाए दिन और काम।”**

इसमें सामूहिक श्रम के दौरान स्त्रियों के बीच सहयोग और आत्मीयता दिखाई देती है।

• खेत में रोपाई के समय

**“रोपें धान सखी मिल-जुल के,
बदरा धिरि-धिरि आए,
गीत सुनाएँ काम के संग-संग,
मनवा हरषाए।”**

यह गीत खेतों में स्त्रियों के सामूहिक श्रम और वर्षा ऋतु के संबंध को दर्शाता है।

श्रमगीतों में स्त्री का परिश्रम, धैर्य और संघर्ष झलकता है। वे कठिन श्रम को भी संगीत के माध्यम से सहज बना देती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि लोकगीत केवल मनोरंजन नहीं बल्कि श्रम-संस्कृति का भी महत्वपूर्ण अंग हैं।

लोकगीतों में सामाजिक यथार्थ:

लोकगीतों में दहेज प्रथा, बाल विवाह, गरीबी, स्त्री शिक्षा की कमी तथा सामाजिक असमानताओं का भी चित्रण मिलता है। अनेक लोकगीत इन कुरीतियों की अप्रत्यक्ष आलोचना करते हैं। आधुनिक समय में भी लोकगीतों के नए रूपों में महिला शिक्षा, आत्मनिर्भरता, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक जागरूकता जैसे विषयों को स्थान मिलने लगा है। इससे लोकगीतों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

लोकगीतों में स्त्री सशक्तिकरण की अवधारणा:

यद्यपि पारंपरिक लोकगीतों में स्त्री को परिवार और समाज की मर्यादाओं के भीतर चित्रित किया गया है, फिर भी उनमें स्त्री की आंतरिक शक्ति, धैर्य, संवेदनशीलता और आत्मसम्मान स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। लोकगीतों की नायिका केवल दुःख सहने वाली नहीं है, बल्कि वह परिस्थितियों का सामना करने वाली, परिवार को जोड़ने वाली और सांस्कृतिक परंपराओं को आगे बढ़ाने वाली सशक्त व्यक्तित्व भी है।

वर्तमान समय में अनेक लोक कलाकार और शोधकर्ता लोकगीतों को स्त्री अधिकार, महिला शिक्षा, बालिका शिक्षा, घरेलू हिंसा, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण जैसे विषयों से जोड़ रहे हैं। इससे लोकगीतों का स्वरूप समयानुकूल और अधिक व्यापक बनता जा रहा है।

लोकगीतों में स्त्री जीवन का चित्रण भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इन गीतों के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि स्त्री केवल परिवार की सदस्य नहीं, बल्कि लोकसंस्कृति की संवाहिका भी है।

विवाह, जन्म, त्योहार, कृषि कार्य, ऋतु परिवर्तन और धार्मिक अनुष्ठानों में स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी लोकगीतों को जीवंत बनाए रखती है। अवधी, भोजपुरी और ब्रज क्षेत्र के लोकगीतों में भाषा, संगीत और भावों की विविधता होने के बावजूद स्त्री जीवन के मूल अनुभव—प्रेम, विरह, मातृत्व, संघर्ष, श्रम और आशा—समान रूप से उपस्थित हैं। यही समानता भारतीय लोकसंस्कृति की एकता का परिचायक है।

निष्कर्ष

लोकगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक स्मृति और लोकजीवन के जीवंत दस्तावेज हैं। इनमें स्त्री जीवन का अत्यंत संवेदनशील, यथार्थ और बहुआयामी चित्रण मिलता है। पुत्री, पत्नी, बहू और माँ के रूप में स्त्री के विविध स्वरूपों के साथ-साथ उसके श्रम, त्याग, संघर्ष, प्रेम, विरह और आत्मसम्मान का भी प्रभावशाली चित्रण लोकगीतों में मिलता है। लोकगीत यह भी सिद्ध करते हैं कि स्त्री भारतीय संस्कृति की संरक्षिका तथा परंपराओं की प्रमुख संवाहिका है। वर्तमान समय में इन लोकगीतों का संरक्षण, दस्तावेजीकरण तथा अकादमिक अध्ययन आवश्यक है ताकि भावी पीढ़ियाँ भारतीय लोकसांस्कृतिक विरासत से परिचित हो सकें। साथ ही, लोकगीतों का स्त्री-विमर्श के दृष्टिकोण से अध्ययन भारतीय समाज में लैंगिक समानता और सांस्कृतिक चेतना को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल वासुदेव शरण. भारतीय लोकसाहित्य. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस; 2008.
2. उपाध्याय कृष्णदेव. भोजपुरी लोकगीत. वाराणसी: हिंदी प्रचारक पुस्तकालय; 2005.
3. शुक्ल रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन; 2011.
4. त्रिपाठी रामनरेश. ग्राम साहित्य. प्रयागराज: हिंदी मंदिर; 2009.
5. द्विवेदी हजारी प्रसाद. भारतीय संस्कृति के विविध आयाम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2010.
6. मिश्र विद्यानिवास. लोक साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2007.
7. भटनागर रामरतन. लोकसाहित्य और संस्कृति. जयपुर: पंचशील प्रकाशन; 2004.
8. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, संपादक. लोकगीत संग्रह. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author



Vibha Singh is a Research Scholar at Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly, affiliated with Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India. Her academic pursuits focus on research and higher education. She is actively engaged in scholarly activities and contributes to the academic discourse through research, study, and intellectual inquiry.